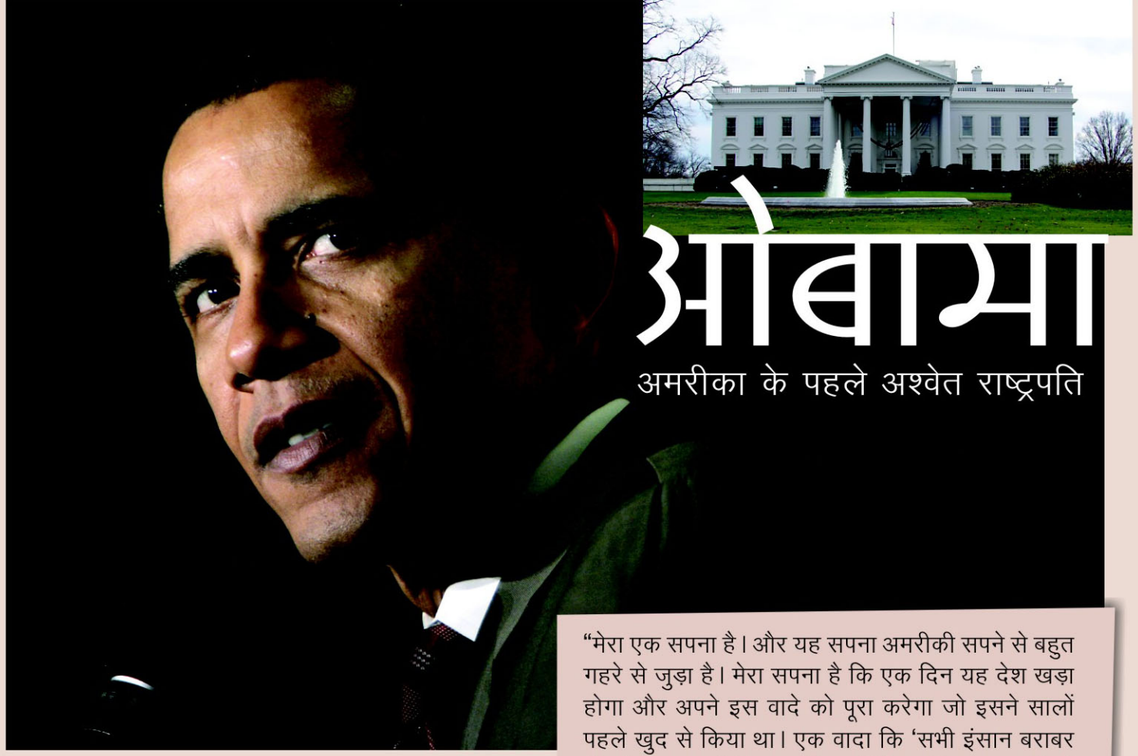

ओबामा

अमरीका के पहले अश्वेत राष्ट्रपति

रैक्स डी रोज़ारियो

भारत और अमरीका कई तरह से एक-जैसे हैं। दोनों देशों में लोकतंत्र है। अमरीका दुनिया का सबसे दमदार लोकतांत्रिक देश है और भारत सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। दोनों ही देशों में जनता अपने नेता का चुनाव करती है जो शासन चलाता है। दोनों ही देशों में बड़ी संख्या में कई सारे अल्पसंख्यक समुदाय हैं जिनके प्रति सालों तक भेदभाव बरता जाता रहा है। अक्सर उन्हें अपने ही देश में दूसरे दर्जे के नागरिक के रूप में रहना पड़ता था। दोनों ही जगह इन भेदभावों को कम करने के लिए कई कदम उठाए गए हैं। इन भेदभावों के कारण ये समुदाय आज तक हाशिए में ही रहते आए हैं।

148 साल पहले अब्राहिम लिंकन संयुक्त राष्ट्र अमरीका के राष्ट्रपति निर्वाचित हुए थे। उन्होंने घोषणा की थी कि वे इस देश से गुलामप्रथा को खत्म कर देंगे। कई सारे दक्षिणी राज्यों ने इस घोषणा के कारण खुद को संघ से अलग कर दिया। वो इसलिए क्योंकि इनकी अर्थव्यवस्था कपास के खेतों में काम करने वाले गुलामों पर निर्भर करती थी। अधिकांश गुलाम अफ्रीका से पकड़कर लाए गए थे। वैसे ही जैसे ब्रिटेश सरकार भारत से बिहारियों और तमिल लोगों को मॉरिशस, फीजी और दक्षिण अफ्रीका की चीनी मिलों और श्रीलंका के चाय बागानों में काम करने के लिए ले जाती थी। इन गुलामों के पास कोई अधिकार नहीं होते थे। उनकी ज़िन्दगी बड़ी दयनीय होती थी ।

> "मेरा एक सपना है। और यह सपना अमरीकी सपने से बहुत गहरे से जुड़ा है। मेरा सपना है कि एक दिन यह देश खड़ा होगा और अपने इस वादे को पूरा करेगा जो इसने सालों पहले खुद से किया था। एक वादा कि 'सभी इंसान बराबर हैं'। मेरा सपना है कि एक दिन जॉर्जिया की लाल पहाड़ियों पर अश्वेत गुलाम मज़दूरों के बेटे और उनके मालिकों के बेटे एक साथ बराबरी और भाईचारे के साथ बैठेंगे। मेरा सपना है कि एक दिन मिसीसिपी जैसा राज्य, जहाँ आज गैर-बराबरी और अत्याचार का बोलबाला है, न्याय और आज़ादी के समन्दर में बदल जाएगा। मेरा सपना है कि मेरे चार छोटे बच्चे एक ऐसे मुल्क में जिएँगे जहाँ उन्हें उनकी चमड़ी के रंग से नहीं, उनके चरित्र के गुणों से पहचाना जाएगा।
>
> आज मैंने एक सपना देखा है!"
>
> - मार्टिन लूथर किंग (जूनियर)

मार्टिन लूथर किंग (जूनियर) ने यह भाषण अमरीका की राजधानी वॉशिंगटन डी.सी. के लिंकन मेमोरियल पर 27 अगस्त 1963 को दिया था। मार्टिन लूथर किंग को गांधी के सच्चे अनुयायी और अमरीका में अश्वेत लोगों के लिए संघर्ष करने वाले योद्धा के तौर पर पूरे विश्व में मान दिया जाता है।

अगले साल अमरीका में गृहयुद्ध छिड़ गया जो पाँच सालों तक चला। दक्षिणी राज्यों के राज्य मण्डल की हार हुई और गुलाम-प्रथा का देश से खात्मा हो गया।

बावजूद इसके दक्षिणी राज्यों ने अफ्रीकी-अमरीकियों से भेदभाव बरतना जारी रखा। उन्होंने ऐसे कानून बनाए जिन्होंने शिक्षा, नौकरियों, स्वास्थ्य सेवाओं आदि को इन समुदाय के लोगों की पहुँच से दूर रखा। यह 1950-1960 के दशक की बात है जब अफ्रीकी-अमरीकी लोगों ने अपने अधिकारों के लिए आन्दोलन छेड़ दिया। तब अमरीकी सरकार ने ऐसे कदम उठाए जिनसे शिक्षा और नौकरियाँ इन लोगों की पहुँच में आ गईं। यह एक बहुत मुश्किल संघर्ष था। कई लोगों की जानें गईं। लोगों के सबसे लोकप्रिय नेता मार्टिन लूथर किंग की 1968 में हत्या कर दी गई।

बराक ओबामा का अमरीकी राष्ट्रपति के रूप में चुना जाना एक तरह से इस लम्बे चले आ रहे संघर्ष का अन्त है। वो संघर्ष जिसमें अफ्रीकी-अमरीकी अश्वेत हर कदम पर भेदभाव के खिलाफ लड़ रहा था। और एक सामान्य अमरीकी की तरह जीने के अपने अधिकार की माँग कर रहा था। यह संकेत है अमरीकी समाज के खुलेपन का। इससे पता चलता है कि वे अब राष्ट्र निर्माण में अफ्रीकी-अमरीकी, लातिन-अमरीकी लोगों की बराबर भूमिका को स्वीकारने को तैयार हैं।

भारत में भी उन समुदायों की मदद के लिए कदम उठाए गए हैं जो जाति-प्रथा या अन्य कारणों से सदियों से भेदभाव भुगतते आए हैं।

अमरीकी गृहयुद्ध की तरह भारत में भी भीमराव अम्बेडकर जैसे समाज-सुधारकों ने लम्बा संघर्ष किया है। इनका उद्देश्य था हाशिए में जी रहे लोगों खासकर दलितों तथा आदिवासियों को बेहतर जीवन दिलाना। इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था शिक्षा और नौकरियों में आदिवासियों, दलितों और अन्य सामाजिक व आर्थिक रूप से पिछड़े समुदायों को आरक्षण देना।

भारत में दलितों, आदिवासियों और पिछड़ा वर्ग को राजनीति में भी आरक्षण दिया गया है। इसी का नतीजा है कि इन अल्पसंख्यक समुदायों के हितों को ध्यान में रखकर कई राजनीतिक पार्टियाँ बनीं। मसलन, समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी। इनसे उन समुदायों में गर्व की भावना आई है जिनका प्रतिनिधित्व ये पार्टियाँ करती हैं।

मायावती जैसे दलित राजनेताओं का उभरना अमरीका में ओबामा सरीखे अश्वेत राजनेता के उभरने जैसा ही है। हमारे देश में हम एक दलित और एक अल्पसंख्यक समुदाय का राष्ट्रपति देख चुके हैं। हमारी मौजूदा राष्ट्रपति एक महिला हैं। हम यह नहीं भूल सकते कि हमारे देश में महिलाओं के प्रति भी कई तरह के भेदभाव बरते जाते हैं। हमने कई महिलाओं को मुख्यमंत्रियों के रूप में भी निर्वाचित किया है। हमें उस दिन का इन्तज़ार रहेगा जब भारत में भी कोई दलित या आदिवासी प्रधानमंत्री के पद पर निर्वाचित हो – वैसे ही जैसा अमरीका में हुआ है।

सभी फोटोः इंटरनेट से साभार.

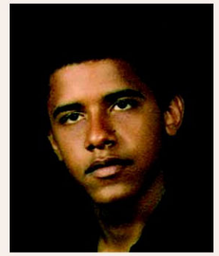

जन्म
04/08/1961

जन्मस्थान
हवाई (अमरीका)

माँ अमरीका की निवासी और पिता केन्याई। बचपन इन्डोनेशिया में बीता। दस साल की उमर में वापिस अमरीका आए और अपने नाना-नानी के साथ हवाई में रहे। उन्होंने न्यूयॉर्क में कोलम्बिया विश्वविद्यालय से राजनीति विज्ञान में स्नातक की उपाधि सन् 1973 में प्राप्त की। सन् 1977 में उन्होंने हार्वर्ड लॉ स्कूल में दाखिला लिया। यहीं उन्हें प्रतिष्ठित पत्रिका "हार्वर्ड लॉ रिव्यू" का पहले साल सम्पादक और फिर अध्यक्ष बनाया गया। इसी दौरान अपनी पहली किताब *ड्रीम्स फ्रॉम माय फादर* लिखने की शुरुआत हुई। यह किताब उनके व्यक्तिगत जीवन पर आधारित है और सन् 1995 में प्रकाशित हुई है। बराक ओबामा 2004 से अमरीकी सिनेट के सदस्य हैं। वे अमरीकी सिनेट के सदस्य बनने वाले पाँचवें अफ्रीकी-अमरीकी थे और अब वे अमरीका के पहले अश्वेत राष्ट्रपति बनेंगे।

बराक ओबामा बाएँ हाथ से काम करते हैं और उनका पसन्दीदा खेल बास्केटबाल है। वे स्कूली बास्केटबाल टीम के सदस्य रहे हैं। खाली समय में वे स्क्रेबल (शब्द पहेली जैसा खेल) खेलना पसन्द करते हैं। उनकी दूसरी किताब *औडेसिटी ऑफ होप* सन 2006 में प्रकाशित हुई है। वे अपनी पहली किताब के लिए "बेस्ट स्पोकन औडिओ बुक" का ग्रेमी पुरस्कार भी जीत चुके हैं। उनकी वेबसाइट पर हिंदी और मलयालम में भी सूचनाएँ होती हैं। उनकी जीत को पूरे अमरीका में एक बड़े परिवर्तन के तौर पर देखा जा रहा है।

अपनी माँ के साथ ओबामा

एक जापानी हाइकू

मेरे छोटे से गाँव में
मक्खियाँ भी डरतीं
बड़े आदमी को काटने से।

-इस्सा

बहुत से लोग इसे परी-कथा का सच होना मानते हैं। बहुत से लोगों का कहना है कि यह अविश्वसनीय की जीत है। कई लोग ऐसे हैं जो इसे सिर्फ अमरीका ही नहीं, दुनिया के स्तर पर एक बड़े परिवर्तन के रूप में देखते हैं। "बराक हुसैन ओबामा" का अमरीका का राष्ट्रपति चुना जाना अपने साथ बहुत से "प्रथम" लेकर आया है। वे एक ऐसे समय में अमरीका के शासन प्रमुख चुने गए हैं जब अफगान और ईराक युद्ध की वजह से पूरी दुनिया में अमरीका की साख बहुत नीचे चली गई है। वे जब भी बोलते हैं सामने वाला उन्हें मंत्रमुग्ध होकर सुनता है। उनकी वाक-कला उनकी सबसे बड़ी ताकत मानी जाती है। हम यहाँ उस भाषण का अंश पेश कर रहे हैं जिससे वे पहली बार सुर्खियों में आए थे। 2004 के चुनावों के पहले डेमोक्रेटिक पार्टी के सम्मेलन में पहली बार बराक ओबामा को देश और दुनिया ने सुना। उनकी आदत है कि वे अपनी बातों में अपने व्यक्तिगत जीवन की कहानियाँ पिरो देते हैं। उनके लिए कहा जाता है कि वे अपनी हर कमज़ोरी को अपनी मज़बूती में बदल लेते हैं। इस अंश से उनके शुरुआती जीवन और परिवार के बारे में भी पता चलता है और उनकी अपने देश अमरीका को लेकर सकारात्मक सोच भी नज़र आती है।

मिहिर

2004 डेमोक्रेटिक पार्टी सम्मेलन में दिया गया मुख्य वक्तव्य

"आज की रात मेरे लिए विशेष सम्मान की रात है क्योंकि सच कहें तो आज इस मंच पर मेरा होना इतना आसान नहीं था। मेरे पिता एक विदेशी छात्र थे जिनका जन्म और पालन-पोषण केन्या के एक छोटे-से गाँव में हुआ। उनका बचपन बकरियाँ चराते हुए बीता और वे एक टीन की छत वाले स्कूल में पढ़ने जाते थे। उनके पिता यानी मेरे दादा एक घरेलू नौकर थे, एक रसोइया। लेकिन मेरे दादा ने अपने बेटे के लिए बड़े सपने देखे थे। कड़ी मेहनत और लगन के बूते मेरे पिता ने एक जादुई देश अमरीका में पढ़ने के लिए छात्रवृत्ति पाई। अमरीका जो स्वतंत्रता और अवसरों का देश है। यहाँ पढ़ने के दौरान मेरे पिता मेरी माँ से मिले। मेरी माँ का जन्म दुनिया के दूसरे किनारे बसे शहर कैन्सास में हुआ था। उनके पिता अधिकांशतः तेल रिग्स और खेतों में काम किया करते थे। मेरी नानी ने अपनी बेटी को बड़ा किया और साथ ही एक बम बनाने के कारखाने में काम करती रहीं। युद्ध की समाप्ति के बाद उन्होंने अपनी पढ़ाई जारी रखी और आगे चलकर अपने लिए घर खरीदा। अवसरों की तलाश में उन्होंने पश्चिम का रुख किया।

उन्होंने भी अपनी बेटी के लिए एक बड़ा सपना देखा। दो अलग-अलग महाद्वीपों में पैदा हुआ एक साझा सपना। मेरे माता-पिता ना सिर्फ असीम प्यार साझा करते हैं, वे इस देश की अनन्त सम्भवनाओं में एक स्थायी विश्वास भी साझा करते हैं। उन्होंने मुझे एक अफ्रीकी नाम दिया, "बराक" यानी "भाग्यशाली"। यह मानते हुए कि सहिष्णु अमरीका में आपका नाम आपकी सफलता में बाधक नहीं बन सकता। उन्होंने मुझे सबसे अच्छे स्कूल में भेजने का सपना देखा, हालाँकि वे अमीर नहीं थे। उनका मानना था कि एक उदार अमरीका में अपनी प्रतिभा को तराशने के लिए आपका अमीर होना ज़रूरी नहीं। आज वे दोनों नहीं हैं, लेकिन मुझे पता है कि आज की रात वे मुझे गर्व भरी निगाहों से देख रहे होंगे।

आज जो मैं यहाँ खड़ा हूँ अपनी बहुरंगी विरासत का आभारी हूँ। और मैं जानता हूँ कि मेरे माता-पिता के सपने मेरी दोनों बेटियों में आगे जिएँगे। मैं जानता हूँ कि मेरी यह कहानी एक वृहत अमरीका कहानी का हिस्सा है। दुनिया के और किसी मुल्क में मेरी यह कहानी सम्भव ना होती। हमारे देश की महानता आसमान छूती इमारतों में नहीं, न ही हमारी सैन्य ताकत में है। यह हमारी अर्थव्यवस्था के वृहत आकार में भी नहीं। यह महानता छुपी है एक सामान्य से वादे में "एक सत्य कि दुनिया में सभी इन्सान समान हैं" कि उन्हें बनाने वाले ने कुछ समान अधिकार दिए हैं। और इनमें शामिल हैं अपनी ज़िन्दगी आज़ादी से जीने और अपनी खुशियों को पाने के अधिकार।"